राजस्थान-सरकार

निदेशालय
राजस्थान राज्य अभिलेखागार
बीकानेर

स्वतंत्रता सेनानी दीर्घा, बीकानेर

राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानियों की कहानी
राज्य अभिलेखागार की जुबानी

राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानियों की कहानी राज्य अभिलेखागार की जुबानी

- प्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम तथा प्रजामण्डल से सम्बन्धित समस्त अभिलेखों व पत्रावलियों का डिजिटाईजेशन व माईक्रोफिल्मिंग पूर्ण।
- विभाग की वेब–साईट www.rsad.rajasthan.gov.in पर ऑन–लाईन है अभिलेख।
- स्वतंत्रता सेनानियों के संस्मरण भी ऑन–लाईन।
- प्रदेश की प्रथम सेनानी सचित्र दीर्घा मुख्यालय, बीकानेर में।
- स्वतंत्रता सेनानियों के मौखिक इतिहास पर काम करने वाला राज्य अभिलेखागार देश में अग्रणी।
- प्रदेश के 246 स्वतंत्रता सेनानियों के संस्मरण सीडी व हार्ड डिस्क में सुरक्षित।

रहस्यमय पर्वतों की श्रृंखलाओं और नदियों की जलधाराओं से पवित्र वातावरण युक्त हमारा देश भारत भोजपत्रों में संचित ज्ञान से पूरब को देदीप्यमान करता हुआ विश्व के मानचित्र में किसी आश्चर्यलोक के समान था। यह अद्भुत सुरम्य देश कालान्तर में आक्रमणों और उपनिवेशवाद के कष्टप्रद बोझ के साथ परतन्त्रता की बेड़ियों में जकड़ गया। तद्यपि इसने इस त्रासदी में भी पुनर्जन्म लेकर आजादी की ओर कदम बढ़ाने प्रारम्भ किये। भाषा, संस्कृति, धर्म और रीति–रिवाज आदि सभी दृष्टियों से विविधताओं के होते हुए भी यह एकता के साथ अपनी मंजिल की ओर अग्रसर हुआ। राष्ट्रों के इतिहास की यह अपूर्व घटना थी। किन्तु विरोधाभासों से पूर्व इस देश की मिट्टी में ही समरूपता थी। ब्रिटिश शासन के नृशंस अत्याचार, कुशासन, मनमानी और शोषण आदि के विरुद्ध सम्पूर्ण भारत में इस शासन से मुक्त होने का संकल्प दृढ़तर होता गया और अंततः यह संकल्प पूर्ण हुआ।

स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास राजस्थान के सपूतों के शौर्य और उनके बलिदान का साक्षी है। राजपूताने की सभी रियासतों ने अंग्रेजों के विरुद्ध आन्दोलनों में जोशपूर्ण भूमिका निभाई। गुलामी की असहनीय वेदना से त्रस्त यहाँ के देशभक्त आबाल–वृद्धों में ब्रिटिश शासन का अन्त करने का जोश था। देश को अंग्रेजी शासन से स्वतन्त्रता मिलने के बाद भी ये स्वतन्त्रता सेनानी प्रचलित तत्कालीन सामन्ती व्यवस्था से मुक्ति प्राप्ति के लिए भी संघर्षरत रहे। राजपूताने की सभी रियासतों के जन–आन्दोलन इसके प्रमाण हैं। यहाँ स्थानीय और क्षेत्रीय समस्याओं को लेकर भी किसान और जनजाति आन्दोलन जैसे कई सशक्त आन्दोलन हुए, जो भावी राजनीतिक आन्दोलन की आधारशिला बने।

स्वतन्त्रता के समर में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भाग लेने वाले सभी स्वतन्त्रता सेनानी हमारे आराध्य है। इनमें कुछ दिवंगत हो गए हैं, जबकि कुछ जीवित हैं। कालान्तर में

यह अनुभव किया जाने लगा कि तत्कालीन इतिहास से वर्तमान और आगामी पीढ़ी को अवगत कराने, स्वतन्त्रता के मूल्य को पहचानने, देश–विदेश का वातावरण बनाने और प्रमुख रूप से इन सेनानियों की वीरगाथा को जन–जन में प्रसृत करने के उद्देश्य से राजस्थान राज्य अभिलेखागार द्वारा सन् 1982 ई. में प्रारम्भ मौखिक इतिहास संदर्भ योजना के अन्तर्गत राजस्थान के 246 जीवित स्वतन्त्रता सेनानियों के संस्मरणों को ध्वनिबद्ध किया गया। इन स्वतन्त्रता सेनानियों के संस्मरण ऑडियो कैसेट में संरक्षित किये गये तदुपरान्त इनको सीडी व हार्ड डिस्क में सुरक्षित कर दिया गया। यह परियोजना राजस्थान राज्य अभिलेखागार विभाग को देने का मुख्य उद्‌देश्य विभाग में, राजपूताना की विभिन्न रियासतों में हुए आन्दोलनों से सम्बन्धित पत्रावलियों का होना है। जिनमें तत्कालीन आन्दोलनों में भाग लेने वाले स्वतन्त्रता सेनानियों की गतिविधियों पर प्रकाश पड़ता है। स्वतन्त्रता आन्दोलन एवं प्रजा मण्डल में भाग लेने वाले स्वतन्त्रता सेनानियों की उस समय की गोपनीय पत्रावलियां व समाचार पत्रों की कटिंग्स विभाग में उपलब्ध है। देश के अनेक शोध अध्येता, जिन्होंने स्वतंत्रता संग्राम पर शोध कार्य किया है, उन्होंने इस विभाग की इन पत्रावलियों का पर्याप्त उपयोग भी किया है। परंतु जो शोध प्रबन्ध अभी तक प्रकाश में आये, उनके अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि केवल इन पत्रावलियों पर आधारित शोध तब तक पूर्ण नहीं माना जा सकेगा जब तक कि जन–आन्दोलनों में भाग लेने वाले व्यक्ति द्वारा व्यक्तिगत रूप से दिये गये संस्मरणों का इनमें समावेश नहीं होगा। इसी बात को ध्यान में रखकर विभाग ने ऐसे सभी जीवित स्वतंत्रता–सेनानियों, जिन्होंने अपने–अपने क्षेत्र में जन–आन्दोलनों में सक्रिय रूप से भाग लिया था। उनके संस्मरणों को ध्वनिबद्ध करने का निश्चय किया।

वर्ष 2011 ई. में विभाग प्रदेश के 212 स्वतन्त्रता सेनानियों की सचित्र दीर्घा का निर्माण, मुख्यालय, बीकानेर में करवा चुका है, इन स्वतन्त्रता सेनानियों के संस्मरणों की सीडी आमजन के लिये उपलब्ध करवा दी गयी।

राजस्थान का स्वतंत्रता आंदोलन व प्रजामण्डल ऑन–लाईन :–

मुख्यालय, बीकानेर में राजपूताना की समस्त रियासतों के स्वतंत्रता संग्राम व प्रजा मण्डल से सबंधित पत्रावलियाँ उपलब्ध है। आन्दोलन के समय की स्वतंत्रता सेनानियों से सम्बन्धित गोपनीय पत्रावलियों भी उपलब्ध है। विभाग प्रदेश के स्वतंत्रता आंदोलन तथा प्रजामण्डल से सबंधित सभी अभिलेखों व पत्रावलियों को डिजिटाईज कर अपनी वेब साईट www.rsad.rajasthan.gov.in पर ऑन लाईन कर चुका है। देश–विदेश के शोधार्थी व आमजन राजस्थान के स्वतंत्रता आंदोलन व प्रजामण्डल से सबंधित अभिलेखों को देश–दुनिया में कही भी आसानी से देख व अध्ययन कर सकता है। डिजिटाईजेशन के साथ–साथ विभाग इन

अभिलेखों की माईक्रोफिल्मिंग भी करवा चुका है। माईक्रोफिल्म में अभिलेख मानक तापमान ($15-20^{0}C$) पर 500 वर्ष तक सुरक्षित रह सकते है।

मौखिक इतिहास योजना की प्रक्रिया :— इतिहास तथ्यों पर आधारित होता है और तथ्य राज्य अभिलेखागार अथवा शोध संस्थानों को पत्रावलियों में उपलब्ध है, परन्तु यह परियोजना पूर्णतः मौखिक इतिहास पर आधारित है और उससे भी कठिन कार्य यह कि इस बात की सत्यता को किस प्रकार परखा जावे कि सम्बन्धित व्यक्ति ने स्वतंत्रता आंदोलन अथवा प्रजामण्डल आन्दोलन में भाग लिया है अथवा नही। विभाग ने इस सम्पूर्ण प्रक्रिया को तकनीकी व शोधपरक स्वरूप प्रदान करने का प्रयास किया है। सर्वप्रथम जिस स्वतंत्रता सेनानी के संस्मरण ध्वनिबद्ध करने होते है, उनकों प्रश्नावली भेजी जाती है। उसके प्राप्त होने के पश्चात विभाग का शोध खण्ड अपने यहाँ उपलब्ध स्वतंत्रता आंदोलन से सबंधित पत्रावलियों में उनके (स्वतंत्रता सेनानी) द्वारा प्रश्नावली में दी गयी जानकारी का अभिलेखों से मिलान व जाँच करता है। जिसके दो उद्देश्य है— (1) उस व्यक्ति की घटना से सम्बद्धता के सरकारी पक्ष की जानकारी होना तथा (2) कौनसी ऐसी बातें है जिनके बारे में अभिलेख मौन है परन्तु स्वतंत्रता सेनानी अपनी जुबानी उस घटनाओं पर प्रकाश डालता है। इससे जहाँ आने वाली पीढ़ी स्वतंत्रता आंदोलन की घटनाओं को अभिलेखों तथा मौखिक इतिहास दोनों से अध्ययन कर जान व समझ सकेंगी, वही शोध जगत आन्दोलन का पूर्ण रूप से विश्लेषण कर पायेगा।

संस्मरणों को ध्वनिबद्ध करने के पश्चात् लिपिबद्ध कर संबंधित स्वतंत्रता सेनानी को उसकी प्रति भेजी गयी, ताकि वे स्वयं देख ले, जो बात उन्होंने बातचीत के दौरान कही है, उसमें व्यक्ति का नाम, स्थान का नाम या तिथि आदि में कोई गलती हो तो उसे दुरूस्त कर लेवे। इसका उद्देश्य यह है कि जो कुछ भी उन्होंने कहा है वह उन्होंने पढ़ा है और प्रत्येक पृष्ठ पर पढ़ने के पश्चात यदि कोई त्रुटि हो तो उसको दुरूस्त करके उस पर हस्ताक्षर किये है। इसी कारण से मौखिक इतिहास होते हुए भी संस्मरणों पर आधारित इनकी पुस्तकें शोधार्थियों के लिये प्राथमिक स्रोत के रूप में उपयोग में ली जाती है।

संस्मरणों पर आधारित पुस्तकों का प्रकाशन—

विभाग संस्मरणों पर आधारित संभागवार पुस्तकों का प्रकाशन कार्य भी पूर्ण कर चुका है। संस्मरणों के प्रकाशन में इसकी मौलिकता से किसी भी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया गया है। वस्तुतः स्वतंत्रता सेनानियों की उम्र अधिक होने के कारण कई शब्दों व लाईनों का बार—बार प्रयोग हुआ है, उनको एकरूपता प्रदान की गयी है ताकि पाठकगण व शोधार्थियों को पुस्तक पढ़ने व उसको स्रोत सामग्री के रूप में उपयोग करने में किसी प्रकार की

कठिनाई न हो। पुस्तक संपादन में उन प्रसंगों को भी हटा दिया गया है जो व्यक्तिशः किसी नेता या व्यक्ति विशेष को लेकर कहे गये है तथा वर्तमान समय में उनकी कोई प्रासंगिकता नहीं है।

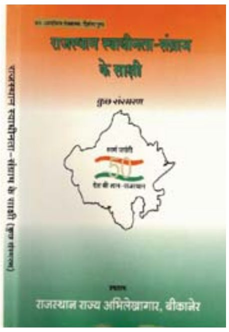

भरतपुर अंचल

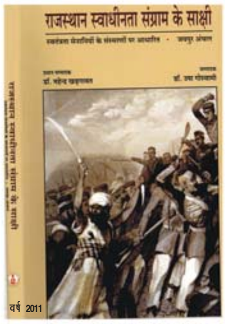

जयपुर अंचल

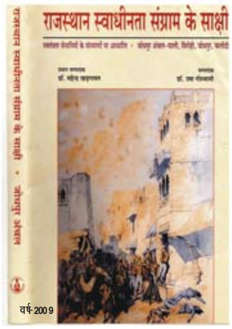

जोधपुर अंचल

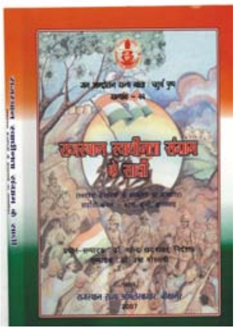

हाड़ौती अंचल

उदयपुर अंचल

मुख्यालय, बीकानेर में आने वाली पीढ़ी को प्रेरणा देने तथा शोधार्थियों के उपयोग हेतु प्रदेश के 220 स्वतंत्रता सेनानियों की सचित्र दीर्घा का निर्माण किया गया है। इन स्वतंत्रता आन्दोलन से जुड़े नायकों के चित्र इकट्ठा करने में ही विभाग को तीन वर्ष से अधिक समय लग गया। वर्ष 2011 ई. में आमजन के लिये उपलब्ध करवायी गयी यह दीर्घा प्रदेश की प्रथम स्वतंत्रता सेनानी दीर्घा है।

मौखिक इतिहास परियोजना में उन्ही स्वतंत्रता सेनानियों के संस्मरण ध्वनिबद्ध किये गये जो 1982 ई से पूर्व अथवा उसके पश्चात् जीवित थे। विभाग 1982 ई. से पूर्व के स्वतंत्रता सेनानियों को अपने द्वितीय चरण में इस दीर्घा में सम्मिलित करना चाहता है, जिसका निर्माण प्रस्तावित है।

स्वतंत्रता सेनानी दीर्घा

स्वतंत्रता सेनानी दीर्घा में सेनानियों के चित्रों की इस प्रकार दर्शाया गया है।

स्वतंत्रता सेनानियों के संस्मरणों की सी.डी.

1857 ई की क्रांति पर पुस्तकें

विभाग ने 1857 की क्रांति पर भी दो पुस्तकों का प्रकाशन किया है जो अभिलेखों पर आधारित है। प्रथम पुस्तक पूर्व निदेशक श्री नाथूराम खड़गावत ने 1957 ई. में Rajasthan's Role in the Struggle of 1857 लिखी थी। सन् 2014 ई. में निदेशक, डॉ. महेन्द्र खड़गावत द्वारा ''1857 की क्राति में राजपूताना का योगदान'' (कतिपय अप्रकाशित दस्तावेजों पर आधारित) का प्रकाशन किया गया है। दोनों ही पुस्तकों में 1857 की क्रान्ति से सबंधित अभिलेखागार में उपलब्ध मूल अभिलेखों का उपयोग किया गया है।

1857 की क्रान्ति में राजपूताना का योगदान'' पुस्तक में क्रांति से सम्बन्धित अभिलेखों को स्केन करके भी प्रकाशित किया गया है।

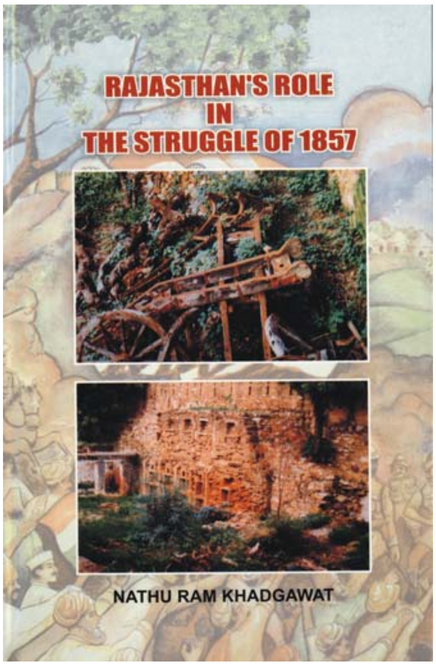

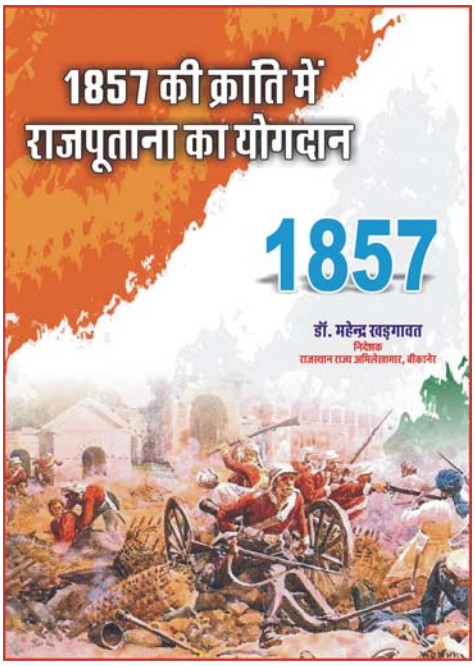

राजस्थान राज्य अभिलेखागार विभाग ने प्रदेश के स्वतंत्रता आंदोलन तथा प्रजामण्डल आन्दोलन से संबंधित अभिलेखों का डिजिटाईजेशन व माईक्रोफिल्म करवाकर तथा उन्हें अपनी वेब–साईट में ऑन–लाईन कर देश के लिये हंसते–हंसते अपनी जान न्यौछावर करने वाले इन रणबांकुरों को विनम्र श्रद्धांजली देने का प्रयास किया है। मौखिक इतिहास परियोजना के अन्तर्गत प्रदेश के 240 से ज्यादा स्वतंत्रता सेनानियों के संस्मरणों को ध्वनिबद्ध व लिपिबद्ध कर पुस्तक के रूप में प्रकाशित करने वाला राजस्थान राज्य अभिलेखागार देश के अन्य अभिलेखागारों में अग्रणी है। अपने अतीत को, अपने इतिहास को, अपने संघर्ष को, अपनी गुलामी को व तदुपरान्त अपनी आजादी के इतिहास को सुरक्षित व संरक्षित करने तथा अपने वाली पीढ़ी अपने गौरवमयी इतिहास व प्रेरणा लेने का मार्ग विभाग ने तैयार करने का प्रयास किया है।

डॉ. महेन्द्र खड़गावत
निदेशक,
राजस्थान राज्य अभिलेखागार,
बीकानेर